राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

कस्य नैवोपकुर्वीत, महापुरुष-जीवनी ? ।
सैवाग्रे वर्धितुं सर्वं, नूनं प्रेरयतेतराम् ॥१२०॥

महापुरुषों की जीवनी किसको उपकृत नहीं करती ? वही सबको आगे बढ़ने के लिये निश्चितरूप से अधिक से अधिक प्रेरणा देती है ।

To whom the biography of the great people does not help? They surely inspire all to advance (in their lives).

काचस्यैव मनो रूपं, भेदस्तत्र न कश्चन ।
तस्मान् मनः सुरक्ष्यं हि, काचवत् सर्वदा जनैः ॥१२१॥

मन काँच का ही रूप है, मन और काँच में कोई भेद नहीं है । अतः लोगों को काँच की भाँति मन की भी सदा सुरक्षा करनी चाहिये ।

The mind is like a glass. There is not difference between them. Therefore, people should protect the mind like they are protecting the glass.

काचे मणौ च को भेदः ?, इदं मूढो न वेत्ति हि ।
अत एव मणिं मुक्त्वा, काचं परिदधाति सः ॥१२२॥

काँच में और मणि में क्या भेद होता है ? यह मूर्ख व्यक्ति नहीं जानता । इसीलिये वह मणि को छोड़कर काँच पहनता है ।

What is the difference between the glass and a precious stone? This stupid man cannot know. Therefore, he leaves the jewel and wears the glass.

कादाचित्कं यथा भोज्यं, विशिष्टं रोचकं भवेत् ।
विशेषाङ्कोऽपि पत्रस्य, तथा स्यादतिरोचकः ॥१२३॥

जैसे कभी कभी किया गया विशिष्ट भोजन रुचिकर होता है, वैसे ही पत्र का समय समय पर प्रकाशित विशेषाङ्क भी अति रोचक होता है ।

In the same way the special food is delightful from time to time, the occasional special edition of a publication is attractive.

कार्यकाले तु सेवां यः, स्वस्य दत्ते न कुत्रचित् ।
तं मिथ्याभाषिणं लोका, वदन्ति वञ्चकं सदा ॥१२४॥

जो समय आने पर अपनी सेवा कहीं नहीं देता है, उस झूठ बोलने वाले आदमी को लोग सदा "वञ्चक"कहते हैं।

The people address, the lying person who never performs when the time comes, as swindler/deceiver.

कार्यं कृत्वाऽपि चेत् यस्य, प्रचारः क्रियते नहि ।
तर्हि तज्ज्ञानतः किं न, लोकास्तिष्ठन्ति वञ्चिताः॥१२५॥

कार्य करके भी यदि उसका प्रचार नहीं किया जाता है, तो लोग उस कार्य के ज्ञान से क्या वञ्चित नहीं रह जाते हैं?

Will not the people be ignorant about the work which had been done if there is no any publicity/information about it?

कार्यं जनहिते यस्य, विस्मरन्ति जना न तम् ।
प्रत्युपकुर्वन्ति तं नूनं, नित्यमात्मोपकारकम् ॥१२६॥

जिसका कार्य जनहित में होता है, लोग उसे भूलते नहीं हैं, किन्तु वे लोग तो अपने उपकार करने वाले का नित्य प्रत्युपकार ही किया करते हैं ।

People never forget the one who does the work in the interest of the public. But these people are always returning the favour (only to) those who benefited them.

कार्यं तदेव कर्तव्यं, स्वीयानां स्याद् हितं यतः ।
सङ्कटे परकीया न, साहाय्यं कुर्वते क्वचित् ॥१२७॥

कार्य वही करना चाहिये जिससे अपनों का भला हो । सङ्कट पड़ने पर पराये कहीं सहायता नहीं करते हैं ।

That work should be done which is beneficial for our/known people, as others/unknown will never help in the times of difficulties.

कार्यं तन्नहि कर्तव्यम्, उपहासो यतो भवेत् ।
पात्रानुसारि दानं श्चेद्, निष्फलं तत् कदापि न ॥१२८॥

वह काम नहीं करना चाहिये, जिससे उपहास होता हो । पात्रता के अनुसार दान हो तो वह दान कभी भी निष्फल नहीं होता है ।

That work should not be done that causes ridicule. If the donation/gift is given according to the eligibility/entitlement than that gift is never unsuccessful/unfruitful.

कार्ये व्यस्तैरपि क्रीड्यं, कालं निःसार्य कश्चन ।
शरीरे मनसि क्रीडा, सौष्ठवं निदधाति हि ॥१२९॥

काम में व्यस्त रहने वालों को भी कुछ समय निकाल कर खेलना चाहिये । क्रीडा शरीर और मन में निश्चित रूप से सुन्दरता स्थापित करती है ।

Even the busiest people should take some time off for play. The body and the mind is made beautiful by the play.

कालस्य यत्र मूल्यं न, समृद्धिरपि तत्र न ।
असमृद्धो न देशः स, सुखं पश्यति न क्वचित् ॥१३०॥

जहाँ समय की कीमत नहीं समझी जाती, वहाँ समृद्धि भी नहीं होती है । समृद्धि से शून्य वह देश कहीं भी सुख का दर्शन नहीं करता है ।

Where the time is not valued there is also no prosperity. No country can ever be happy without prosperity/wealth.

काले काले समारोहा, आयोज्यन्त यदि द्रुतम् ।
तर्हि तदितिहासेन, कार्यशक्तिः प्रवर्धते ॥१३१॥

यदि समय समय पर जल्दी जल्दी समारोह आयोजित किये जायें तो उनसे उस संस्था के इतिहास के परिचय से कर्मचारियों में कार्य करने की क्षमता विशेष रूप से बढ़ जाती है ।

If the seminars, from time to time, are quickly organized then the efficiency/capability of the organizers is specially shown in the introduction/overview of the history of the organisation.

काले चेत् क्रियते कर्म, वृथा कालो न याप्यते ।
तर्हि प्रशस्यते कर्ता, मनस्तिष्ठति निर्मलम् ॥१३२॥

यदि समय पर काम कर लिया जाता है और व्यर्थ समय नष्ट नहीं किया जाता है तो उससे कार्यकर्ता की प्रशंसा होती है और मन भी निर्मल रहता है ।

If the work is done on time and the time is not wasted, then that worker is commended/praised, and his mind is also purified.

काले चेन्नावधीयेत, हानिर्भवति सुभृशम् ।
पश्चाद् भवति सन्तापो, दोषः कस्मै प्रदीयताम् ? ॥१३३॥

यदि समय रहते ध्यान नहीं दिया जाय तो बहुत बड़ी हानि हो जाती है । उससे सन्ताप होता है । इसका दोष किसे दिया जाय ?

If one does not pay attention on the time a big loss can happen which creates unhappiness. Who can be blamed for that?

किञ्चित् कर्म न निर्दोषं, बुधा दोषाद् न बिभ्यति ।
दोषं दोषं निरस्यन्तो, गुणान् गृह्णन्ति हंसवत् ॥१३४॥

कोई भी वस्तु निर्दोष नहीं होती है । परन्तु विद्वान् दोष से डरते नहीं हैं । वे दोष दोष को छोडकर वस्तु के गुणों को उसी तरह ग्रहण कर लेते हैं जिस प्रकार हंस पानी मिले दूध में से पानी को छोडकर दूध को ग्रहण करते हैं ।

Nothing is perfect. But wise people are not scared of imperfections. They are taking out the qualities while leaving defects behind, in the same way as swan who can take the milk out of the milky water (water mixed with milk).

कियद् वर्षतु पानीयं, वायुश्च वहतां कियत् ।
स्वस्थानं न त्यजेद् अद्रिर्,– विद्युता ताडितोऽपि च ॥१३५॥

कितना ही पानी बरसे और कितनी ही हवा चले, पर पर्वत बिजली से प्रताडित हुआ भी अपना स्थान नहीं छोड़ा करता है ।

Does not matter how much rain there is, how strong the wind blows but the mountain even when hit/tortured by lightning does not change its place.